सामाजिक विज्ञान

(नागरिक शास्त्र)

अध्याय-3: लोकतंत्र और विविधता

SHIVOM CLASSES 8696608541

लोकतंत्र और विविधता

समाज में विविधता

किसी भी समाज में विविधता तभी आती है जब उस समाज में विभिन्न आर्थिक तबके, धार्मिक समुदायों, विभिन्न भाषाई समूहों, विभिन्न संस्कृतियों और जातियों के लोग रहते हैं।

भारत देश विविधताओं का एक जीता जागता उदाहरण है। इस देश में दुनिया के लगभग सभी मुख्य धर्मों के अनुयायी रहते हैं। यहाँ हजारों भाषाएँ बोली जाती हैं, अलग-अलग खान पान है, अलग-अलग पोशाक और तरह तरह की संस्कृति दिखाई देती है।

सामाजिक विभाजन और राजनीति:

आपने जीव विज्ञान की कक्षा में डार्विन के क्रमिक विकास के सिद्धांत के बारे में पढ़ा होगा। इस सिद्धांत के अनुसार जो सबसे फिट होता है वही जिंदा रह पाता है। मनुष्यों को अपना जीवन सही तरीके से जीने के लिए आर्थिक रूप से तरक्की करनी होती है। जब कोई व्यक्ति आर्थिक तरक्की कर लेता है तो उसे समाज में ऊँचा स्थान मिल जाता है। हर देश के इतिहास में यह देखने को मिलता है कि आर्थिक रूप से संपन्न समूह ने आर्थिक रूप से कमजोर समूह पर शासन किया है। इससे यह सुनिश्चित हो जाता था कि संसाधन और शक्ति के स्रोतों पर किसी खास समूह का एकाधिकार कायम हो सके।

सामाजिक विभाजनों की राजनीति :-

तरह की राजनीति जनता के साथ-साथ देश को भी काफी नुकसान पहुचाता है।इस प्रतिद्वंद्विता के कारण समाज में फुट पड़ जाता है। ऐसी राजनीति बहुत ही गंदी राजनीति होती है। हालाँकि सामाजिक विभाजन की राजनीति पहले से ही चलती आ रही है लेकिन जनता अब इस तरह की राजनीति को समझते हुये उससे ऊपर उठना चाहती है।

- इससे हिंसा, जातीय कटुता और राजनीति में गरमा-गरमी की खतरा बढ़ते जाता है।
- राजनीति और सामाजिक विभाजन का मेल नहीं होना चाहिए।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

• इससे बचने का एक ही उपाय है कि राजनीति में सामाजिक विभाजन को लाना नहीं चाहिए।

• हालाँकि सामाजिक विभाजनों की राजनीति का परिणाम तीन चीजों पर निर्भर करता है।

• लोगों में अपनी पहचान के प्रति आग्रह की भावना।

• किसी समुदाय की मांगो को राजनीतिक दल कैसे उठा रहे हैं।

• अगर राजनीति सामाजिक विभाजन के तौर पर होता है तो वो देश और देश की जनता के लिए बहुत ही दुखदाई होता है।

सामाजिक विविधता का राजनीति पर परिणाम तीन बातों पर निर्भर करता है, जो निम्नलिखित हैं:

- लोग अपनी सामाजिक पहचान को किस रूप में लेते हैं इससे सामाजिक विविधता का राजनीति पर परिणाम तय होता है। यदि किसी खास समूह के लोग अपने को विशिष्ट मानने लगते हैं तो फिर वे सामाजिक विविधता को गले नहीं उतार पाते हैं।
- किसी समुदाय की मांगों को राजनेता द्वारा किस तरह से पेश किया जाता है।
- यह इस पर भी निर्भर करता है कि किसी समुदाय की मांग पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया होती है। यदि सरकार किसी समुदाय की मांग को उचित तरीके से मान लेती है तो फिर उस समुदाय की राजनीति सबल हो जाती है।
- प्राचीन भारत में समाज को कार्य के आधार पर चार समूहों में बाँटा गया था। समय बीतने के साथ इन चार समूहों का स्थान जाति व्यवस्था ने ले लिया। जाति व्यवस्था में जन्म को ही किसी व्यक्ति के कर्म का आधार मान लिया जाता है। कुछ काम ऊँची जाति के लोग ही कर सकते हैं, जबकि कुछ काम केवल नीची जाति के लोगों के लिए तय होते हैं।
- आजादी के कुछ वर्षों पहले तक सभी आर्थिक संसाधन ऊँची जाति के लोगों के हाथों में थे। इन लोगों ने नीची जाति के लोगों को दबाकर रखा था ताकि नीची जाति के लोग सामाजिक व्यवस्था में ऊपर न उठ सकें।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- अंग्रेजी हुकूमत ने भारत में आधुनिक शिक्षा पद्धति की शुरुआत की थी। आजादी के बाद की सरकारों ने भी शिक्षा को बढ़ावा दिया। इससे पिछड़े वर्गों के लोग भी आधुनिक शिक्षा का लाभ उठाने लगे। मीडिया ने भी समाज में जागरूकता फैलाने का काम किया।
- धीरे-धीरे समाज के पिछड़े वर्ग के लोगों में जागरूकता फैलने लगी। इसके दूरगामी परिणाम हुए हैं। आज लगभग हर क्षेत्र में नीची जाति के लोगों का प्रतिनिधित्व देखने को मिलता है। आज नीची जाति के लोग ऊँचे पदों पर आसीन दिखते हैं।
- आज सरकारी तंत्र में समाज के लगभग हर वर्ग का प्रतिनिधित्व दिखाई देता है। इससे यह पता चलता है कि समाज के हर वर्ग को सत्ता में साझेदारी मिलने लगी है। भारत एक मजबूत लोकतंत्र बनने की दिशा में अग्रसर है।

सामाजिक भेदभाव की उत्पत्ति :-

सामाजिक विभाजन मुख्यतः जन्म के आधार पर होता है। जन्म पर आधारित सामाजिक विभाजन का अनुभव हम रोज ही करते हैं। हालाँकि सभी किस्म के सामाजिक विभाजन सिर्फ जन्म पर ही आधारित नहीं होते हैं। कुछ सामाजिक विभाजन का कारण हमारे विचार भी होते हैं। जैसे अगर कोई पुरुष या महिला के ऊँचाई, चमड़े का रंग और उनके शारीरिक क्षमताएँ के आधार पर भी करते हैं।

• कुछ लोग अपने माँ-बाप को छोड़ अलग से अपना धर्म अपनाते हैं।

• हमलोग पढ़ाई के विषय, पेशे, खेल या संकृतिक चुनाव भी अपने पसंद से करते हैं।

• इन सबके आधार पर भी सामाजिक समूह बनते हैं और ये जन्म पर आधारित नहीं होते हैं।

• हालाँकि इससे किसी समुदाय में उतार व चढ़ाव दोनों देखने को मिलते हैं।

• हम लोग के व्यक्तिगत विचार अलग-अलग होने से हमारे सोचने और समझने में भी काफी फर्क पड़ता है।

• कोई व्यक्ति के धर्म एक होने से वो और भी धर्म से जुड़ा हुआ महसूस करता है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

इससे पता चलता है कि विभिन्न समुदायों के लोग अपनी समूहों की सीमाओं से परे भी समानताओं और असमानताओं का अनुभव करते हैं।

विभिन्नताओं में सामंजस्य और टकराव :-

सामाजिक विभाजन का एक मुख्य कारण होता है जब सामाजिक अंतर दूसरी अनेक विभिन्नताओं से ऊपर और बड़े हो जाते हैं। जैसे देखें तो हमारे देश में दलित आमतौर पर गरीब और भूमिहीन है। उन्हें अक्सर भेदभाव और अन्याय का शिकार होना पड़ता है।

• जब एक तरह का सामाजिक अंतर अन्य अंतरों से ज्यादा महत्वपूर्ण बन जाता है।

• और लोगों को लगता है कि वे दूसरे समुदाय के हैं तो इससे एक सामाजिक विभाजन कि स्थिति पैदा होती है।

• जब सामाजिक विभिन्नताएँ एक-दूसरे से गूँथ जाती है तो एक गहरे सामाजिक विभाजन की जमीन तैयार होने लगती है। अगर देखा जाए तो अगर कोई समाज या धर्म को माननेवाले लोग ज्यादा है तो उन्हें संभालना अपेक्षाकृत आसान होता है।

• समाज में विभिन्न तरह के विभाजन देखे जाते हैं।

• चाहे देश बड़ा हो या छोटा, इससे ज्यादा फर्क नहीं पड़ता। अब दुनिया के अधिकतर देश बहू-सांस्कृतिक हो गए हैं।

उदाहरण के लिए :-

○ आयरलैंड और नीदरलैंड में वर्ग और धर्म के बीच मेल दिखाई नही देता। कैथोलिक और प्रोटेस्टेटों के बीच भेदभाव होता है।

○ श्रीलंका में सिंहली और तमिल के बीच जातीय संघर्ष के कारण श्रीलंका में गृहयुद्ध हो जाता है।

○ बेल्जियम में भी फ्रेंच और डचों भाषा के बीच अल्पसंख्यक और बहूसंख्यक के बीच के कारण तनाव पैदा हो गया है।

हासिये पर खड़े लोगों को मुख्यधारा में जोड़ने के लिये सरकार के प्रयास:

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

1. आजादी के बाद संविधान में दो ऐसे अहम प्रावधान किये गये जो भारत को सही दिशा में ले जा सकें।
2. पहला प्रावधान था देश के हर वयस्क नागरिक को मताधिकार देना। उस जमाने में कई जानकारों ने इस बात की हँसी उड़ाई थी। उनका मानना था कि अशिक्षित लोगों में इतना विवेक नहीं हो सकता कि वे अपने मताधिकार का सही उपयोग कर पाएँ। लेकिन गांधीजी का मानना था कि यदि कोई आदमी इतना विवेकपूर्ण हो सकता है कि अपने परिवार का भरण-पोषण कर ले तो फिर उसमें सरकार चुनने लायक विवेक भी अवश्य ही होगा।
3. दूसरा प्रावधान था अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति के लोगों को आरक्षण देना ताकि उन्हें राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ा जा सके। आज एक दलित का बेटा भी आइआईएम और आइआइटी जैसी शिक्षण संस्थानों से शिक्षा प्राप्त कर पाता है और भारतीय प्राशासनिक सेवा में कार्य कर पाता है। यह सब आरक्षण के कारण ही संभव हो पाया है।
4. इसका सही महत्व समझने के लिए हमें विश्व के अन्य देशों के उदाहरणों को देखना होगा। यूरोप के देशों में महिलाओं को मताधिकार मिलने में कई सौ साल लग गये थे। अमेरिका जैसे अति विकसित देश में भी आज तक कोई महिला राष्ट्रपति नहीं बन पाई है। बारक ओबामा से पहले तक कोई भी अश्वेत अमेरिका का राष्ट्रपति नहीं बन पाया था।
5. हमारे देश में लाखों समस्याओं के बावजूद अल्पसंख्य समुदाय और दलित समुदाय के लोग ऊँचे पदों पर पहुँच चुके हैं। भारत में महिला प्रधानमंत्री और महिला राष्ट्रपति भी बन चुकी हैं। भारत के राष्ट्रपति के पद पर सिख, मुसलमान और दलित भी आसीन हो चुके हैं। सिख समुदाय से एक व्यक्ति तो प्रधानमंत्री भी रह चुके हैं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

अमरीका में नागरिक अधिकार आंदोलन (1954 – 1968)

इसका उद्देश्य एफ्रो अमरीकी लोगों के विरूद्ध होने वाले नस्ल आधारित भेदभाव को मिटाना था। मार्टिन लूथर किंग जूनियर की अगुवाई में लड़े गए इस आंदोलन का स्वरूप पूरी तरह हिंसक था। इसने नस्ल के आधार पर भेद – भाव करने वाले कानूनों और व्यवहार को समाप्त करने की माँग उठाई जो अंततः सफल हुई।

अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन के विकास का वर्णन

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिका में नस्लीय भेदभाव बढ़ गया।
- अश्वेत लोगों पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगा दिए गए थे।
- 1980 के दशक में अमेरिका में लगभग 33 प्रतिशत काले लोग, 20 प्रतिशत हिस्पानी और 12 प्रतिशत श्वेत गरीब एवं बेघर थे।
- 1950 के दशक में नागरिक अधिकारों के लिए शक्तिशाली आंदोलन हुए।
- 1954 में वहाँ के सर्वोच्च न्यायालय ने ' अलग परंतु समान ' के सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया।
- नस्लीय भेदभाव के विरूद्ध मार्टिन लूथर किंग जूनियर के नेतृत्व में आंदोलन चलाया गया।
- 1960 के दशक में कानून बनाकर इस भेदभाव को खत्म किया गया।

टॉमी स्मिथ और जॉन कार्लोस ने 1968 के मैक्सिको ओलंपिक खेल में, संयुक्त राज्य अमेरिका में होने वाले रंगभेद के मसले के प्रति अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी का ध्यान किस प्रकार आकर्षित किया?

- बिना जूतों के केवल मोजे पहनकर अश्वेतों की गरीबी को दर्शाया।
- स्मिथ ने अश्वेत लोगों के आत्मगौरव को बताने के लिए अपने गले में काला मफलर पहना था।
- कार्लोस ने मारे गए अश्वेतों की याद में काले मनकों की एक माला पहनी थी।
- काले दसताने और बंधी हुई मुट्ठियों के द्वारा अश्वेत शक्ति को दर्शाया।

अश्वेत शक्ति आन्दोलन

यह आंदोलन 1966 में उभरा और 1975 तक चलता रहा। नस्लवाद को लेकर इस आंदोलन का रवैया ज्यादा उग्र था। इसका मानना था कि अमरीका से नस्लवाद मिटाने के लिए हिस्सा का सहारा लेने में भी हर्ज नहीं है।

एफ्रो अमरीकी

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

एफ्रो अमरीकन, अश्वेत अमरीकी या अश्वेत शब्द उन अफ्रीकी लोगों के वंशजो के लिए प्रयुक्त होता है जिन्हें 17 वीं सदी से लेकर 19 वीं सदी की शुरूआत तक अमरीका में गुलाम बनाकर लाया गया था।

नस्लभेद

किसी देश अथवा समाज में नस्ल के आधार पर कुछ लोगों को नीच या हीन समझना।

रंगभेद

रंग के आधार पर भेदभाव करना।

सामाजिक विविधता

- किसी भी समाज में विविधता तभी आती है जब उस समाज में विभिन्न आर्थिक तबके, धार्मिक समुदायों, विभिन्न भाषाई समूहों, विभिन्न संस्कृतियों और जातियों के लोग रहते हैं।
- भारत देश विविधताओं का एक जीता जागता उदाहरण है। इस देश में दुनिया के लगभग सभी मुख्य धर्मों के अनुयायी रहते हैं। यहाँ हजारों भाषाएँ बोली जाती हैं, अलग – अलग खान पान हैं, अलग – अलग पोशाक और तरह तरह की संस्कृति दिखाई देती है।

सामाजिक भेदभाव की उत्पत्ति के प्रमुख कारण

- **जन्म पर आधारित :-** हम सिर्फ इस आधार पर उस समुदाय के सदस्य हो जाते हैं जिसमें हमारा जन्म हुआ है।
- **पसंद या चुनाव पर आधारित :-** जैसे धर्म, व्यवसाय खेल इत्यादि का चुनाव हम अपनी पसंद से करते हैं।
- सोचने के अलग – अलग ढंग।

सामाजिक विभाजन

जो विभाजन क्षेत्र, जाति, रंग, नस्ल, लिंग आदि के भेद पर किया जाए उसे सामाजिक विभाजन कहते हैं।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

सामाजिक अंतर कब और कैसे सामाजिक विभाजनों का रूप ले लेते हैं?

- जब कुछ सामाजिक अंतर दूसरी अनेक विभिन्नताओं से ऊपर और बड़े हो जाते हैं।
- अमेरिका में श्वेत और अश्वेत के बीच भारी अंतर है जो सामाजिक विभाजन का मुख्य कारण है।
- जब एक तरह का सामाजिक अंतर अन्य अंतरों से ज्यादा महत्वपूर्ण बन जाता है।

विभिन्नताओं में सामंजस्य व टकराव

सामंजस्य :-

- इसके अंतर्गत सामाजिक विभिन्नताओं में एकता दिखाई देती है।
- इसमें लोग यह महसूस करने लगते हैं कि वे विभिन्न समुदायों से संबंध रखते हैं।
- इससे गहरी सामाजिक विभाजन की संभावना घट जाती है।
- **जैसे :-** अमेरिका में श्वेत और अश्वेत का अंतर।

टकराव :-

- इसके अंतर्गत सामाजिक विभिन्नताओं से टकराव उत्पन्न होता है।
- इसमें कई समूह एक मुद्दे पर समान नजरिया रखते हैं तो दूसरे मुद्दे पर उनके नजरियों में अंतर हो जाता है।
- इसमें सामाजिक विभाजन की संभावना बढ़ जाती है।
- **जैसे :-** नीदरलैंड में वर्ग और धर्म के बीच ऐसा मेल नहीं दिखाई देता है।

प्रवासी

अस्थाई तौर पर आर्थिक अवसरों के लिए दूसरे देशों या नगरों में जाकर बसने वाले लोग।

समरूप समाज

एक ऐसा समाज जिसमें सामुदायिक, सांस्कृतिक या जातीय विभिन्नताएँ ज्यादा गहरी नहीं होती।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

सामाजिक विभाजनों की राजनीति

- लोकतंत्र में विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के बीच प्रतिद्वंदिता का माहौल होता है।
- प्रतिद्वंदिता समाज को विभाजित करती है और उन्हें राजनीतिक विभाजनों में बदल देती है जो अंततः संघर्ष, हिंसा या किसी देश के विघटन की ओर ले जाती है।

सामाजिक विभाजनों की राजनीति के परिणाम तय करने वाले कारक :-

- लोगों में अपनी पहचान के प्रति आग्रह की भावना।
- राजनीतिक दलों का संविधान के दायरे में रहकर कार्य करना।
- सरकार विभिन्न सामाजिक वर्गों के प्रति कैसा रूख अपनाती है।

लोकतंत्र

लोकतंत्र शासन की एक ऐसी पद्धति है, जिसमें जनता अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के द्वारा शासन करती है।

लोकतंत्र के प्रकार

प्रत्यक्ष लोकतंत्र :- जिसमें जनता स्वयं शासन में भागीदार होती है। जैसे :- स्विटजरलैंड के कुछ कैन्टन।

अप्रत्यक्ष लोकतंत्र :- इसमें जनता अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के द्वारा शासन चलाती है। जैसे भारत।

लोकतंत्र के पहलू

राजनीतिक पहलू :- लोकतांत्रिक – लोकतंत्र के लिए सहमति और राजनीतिक समानता सरकार की जरूरत होती है।

सामाजिक पहलू :- इसके लिए देश में सामाजिक समानता की आवश्यकता होती है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

आर्थिक पहलू :- कोई विषमता नहीं होनी चाहिए । इसके अन्तर्गत ऐसा नहीं होना चाहिए कि कुछ लोग समृद्ध हो और अधिसंख्या लोग गरीबी रेखा के नीचे गुजर बसर करते है।

लोकतंत्र के पक्ष में

- लोकतंत्र के निर्णय लेने की प्रक्रिया नियमों के अन्तर्गत।
- सरकार लोगो के प्रति जवाब देह होती है।
- लोकतंत्र में निर्णय लेने की प्रक्रिया में नागरिकों के हिस्सा लेने की प्रणाली होती है।

लोकतंत्र के विपक्ष में :-

- सरकार की कोई जवाबदेही नही होती।
- निर्णय लेने की प्रक्रिया नियमों और प्रक्रियाओं पर आधारित नहीं होती है।
- निर्णय लेने की प्रक्रिया का परीक्षण करने के लिए पादरर्शी अधिकार एवं साधन नहीं होते हैं

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 37)

प्रश्न 1 सामाजिक विभाजनों की राजनीति के परिणाम तय करने वाले तीन कारकों की चर्चा करें।

उत्तर – सामाजिक विभाजनों की राजनीति के परिणाम तीन कारकों पर निर्भर करते हैं जो निम्नलिखित हैं:

- यह इस बात पर निर्भर करता है कि लोग अपनी सामाजिक पहचान को किस रूप में लेते हैं। यदि लोग अपने आप को विशिष्ट मानने लगते हैं तो ऐसे में सामाजिक विविधता को पचा पाना मुश्किल हो जाता है।
- राजनेता किसी समुदाय की मांगों को किस तरह से पेश करते हैं।
- किसी समुदाय की मांग पर सरकार की कैसी प्रतिक्रिया होती है। यदि किसी समुदाय की मांग को सही तरीके से माना जाता है तो इससे राजनीति सबल बनती है।

प्रश्न 2 सामाजिक अंतर कब और कैसे सामाजिक विभाजनों का रूप ले लेते हैं?

उत्तर – हर सामाजिक भिन्नता सामाजिक विभाजन का रूप नहीं लेती। सामाजिक अंतर लोगों के बीच बँटवारे का एक बड़ा कारण जरूर होता है किंतु यही अंतर कई बार अलग-अलग तरह के लोगों के बीच पुल का काम भी करती है। सामाजिक विभाजन तब होता है जब कुछ सामाजिक अंतर दूसरी अनेक विभिन्नताओं से ऊपर और बड़े हो जाते हैं। अमेरिका में श्वेत और अश्वेत का अंतर एक सामाजिक विभाजन भी बन जाता है क्योंकि अश्वेत लोग आमतौर पर गरीब हैं, बेघर हैं, भेदभाव के शिकार हैं। हमारे देश में भी दलित आमतौर पर गरीब और भूमिहीन हैं। उन्हें भी अक्सर भेदभाव और अन्याय का शिकार होना पड़ता है। जब एक तरह का सामाजिक अंतर अन्य अंतरों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण बन जाता है और लोगों को यह महसूस होने लगता है कि वे दूसरे समुदाय के हैं तो इससे एक सामाजिक विभाजन की स्थिति पैदा होती है।

प्रश्न 3 सामाजिक विभाजन किस तरह से राजनीति को प्रभावित करते हैं? दो उदाहरण दीजिए।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

उत्तर – राजनीतिक दलों के बीच प्रतिस्पर्धा होती है। जब ये राजनीतिक दल कुछ सामाजिक विभाजनों को अपना समर्थन देते हैं, तो इससे राजनीतिक विभाजन हो सकता है। फलस्वरूप देश में संघर्ष, हिंसा या देश के विघटन की संभावना रहती है।

- उत्तरी आयरलैंड एक उदाहरण है जहां धार्मिक विभाजन ने जातीय-राजनीतिक संघर्ष को जन्म दिया। ईसाई धर्म के दो प्रमुख संप्रदाय: 53% प्रोटेस्टेंट और 44% रोमन कैथोलिक देश में हावी था। कैथोलिक उत्तरी आयरलैंड को आयरलैंड गणराज्य में शामिल करना चाहते थे और प्रोटेस्टेंट ब्रिटेन के साथ रहना चाहते थे। इसके कारण वर्षों तक हिंसा हुई और हजारों लोग मारे गए। शांति तब लौटी जब 1998 में ब्रिटेन की सरकार और राष्ट्रवादियों ने एक शांति संधि पर हस्ताक्षर कर संघर्ष विराम की घोषणा की।
- दूसरा उदाहरण यूगोस्लाविया का है जहां राजनीतिक दलों ने एक-दूसरे की माँगों को मानने से इन्कार कर दिया। प्रत्येक जातीय-धार्मिक समूह एक दूसरे पर हावी होना चाहता था। परिणाम यह हुआ की यूगोस्लाविया सात स्वतंत्र देशों में बाँट गया।

प्रश्न 4 _____ सामाजिक अंतर गहरे सामाजिक विभाजन और तनावों की स्थिति पैदा करते हैं।_____ सामाजिक अंतर सामान्य तौर पर टकराव की स्थिति तक नहीं जाते।

उत्तर – एक ही तरह के सामाजिक अंतर गहरे सामाजिक विभाजन और तनावों की स्थिति पैदा करते हैं। विभिन्न तरह के सामाजिक अंतर सामान्य तौर पर टकराव की स्थिति तक नहीं जाते।

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 38)

प्रश्न 5 सामाजिक विभाजनों को सँभालने के संदर्भ में इनमे से कौन सा बयान लोकतांत्रिक व्यवस्था पर लागू नहीं होता?

a) लोकतंत्र में राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के चलते सामाजिक विभाजनों की छाया राजनीति पर भी पड़ती है।
b) लोकतंत्र में विभिन्न समुदायों के लिए शांतिपूर्ण ढ़ंग से अपनी शिकायतें जाहिर करना संभव है।
c) लोकतंत्र सामाजिक विभाजनों को हल करने का सबसे अच्छा तरीका है।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

d) लोकतंत्र सामाजिक विभाजनों के आधार पर समाज को विखंडन की ओर ले जाता है।

उत्तर – d) लोकतंत्र सामाजिक विभाजनों के आधार पर समाज को विखंडन की ओर ले जाता है।

प्रश्न 6 निम्नलिखित तीन बयानों पर विचार करें:

(अ) जहाँ सामाजिक अंतर एक दूसरे से टकराते हैं वहाँ सामाजिक विभाजन होता है।

(ब) यह संभव है कि एक व्यक्ति की कई पहचान हो।

(स) सिर्फ भारत जैसे बड़े देशों में ही सामाजिक विभाजन होते हैं।

इन बयानों में से कौन कौन से बयान सही हैं।

(क) अ, ब और स

(ख) अ और ब

(ग) ब और स

(घ) केवल स

उत्तर – अ और ब

प्रश्न 7 निम्नलिखित बयानों को तार्किक क्रम से लगाएँ और नीचे दिए गए कोड के आधार पर सही जवाब ढूँढ़ें।

(अ) सामाजिक विभाजन की सारी राजनीतिक अभिव्यक्तियाँ खतरनाक ही हों यह जरूरी नहीं है।

(ब) हर देश में किसी-न-किसी तरह के सामाजिक विभाजन रहते ही हैं।

(स) राजनीतिक दल सामाजिक विभाजनों के आधार पर राजनीतिक समर्थन जुटाने का प्रयास करते हैं।

(द) कुछ सामाजिक अंतर सामाजिक विभाजनों का रूप ले सकते हैं।

(क) द, ब, स, अ

(ख) द, ब, अ, स

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

(ग) द, अ, स, ब

(घ) अ, ब, स, द

उत्तर – (ख) द, ब, अ, स।

प्रश्न 8 निम्नलिखित में किस देश को धार्मिक और जातीय पहचान के आधार पर विखंडन का सामना करना पड़ा?

a) बेल्जियम
b) भारत
c) यूगोस्लाविया
d) नीदरलैंड

उत्तर – c) यूगोस्लाविया।

प्रश्न 9 मार्टिन लूथर किंग जूनियर के 1963 के प्रसिद्ध भाषण के निम्नलिखित अंश को पढ़ें। वे किस सामाजिक विभाजन की बात कर रहे हैं? उनकी उम्मीदें और आशंकाएँ क्या-क्या थीं? क्या आप उनके बयानों और मैक्सिको ओलंपिक की उस घटना में कोई संबंध देखते हैं जिसका जिक्र इस अध्याय में था?

"मेरा एक सपना है कि मेरे चार नन्हें बच्चे एक दिन ऐसे मुल्क में रहेंगे जहाँ उन्हें चमड़ी के रंग के आधार पर नहीं, बल्कि उनके चरित्र के असल गुणों के आधार पर परखा जाएगा। स्वतंत्रता को उसके असली रूप में आने दीजिए। स्वतंत्रता तभी कैद से बाहर आ पाएगी जय यह हर बस्ती, हर गाँव तक पहुँचेगी, हर राज्य और हर शहर में होगी और हम उस दिन को ला पाएँगे जब ईश्वर की सारी संतानें-अश्वेत स्त्री-पुरुष, गोरे लोग, यहूदी तथा गैर-यहूदी, प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक-हाथ में हाथ डालेंगी और इस पुरानी नीग्रो प्रार्थना को गाएँगी 'मिली आज़ादी, मिली आज़ादी! प्रभु बलिहारी, मिली आज़ादी!' मेरा एक सपना है कि एक दिन यह देश उठ खड़ा होगा और अपने वास्तविक स्वभाव के अनुरूप कहेगा, "हम इस स्पष्ट सत्य को मानते हैं कि सभी लोग समान हैं।"

उत्तर –

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

अमरीका में मार्टीन लूथर किंग जूनियर के भाषण में नस्लीय भेदभाव का उल्लेख है। वह गोरों के प्रति गोरों द्वारा अपनाई गई अलगाव की नीतियों का जिक्र कर रहे हैं। वह ऐसे देश की आकांक्षा करता है जहां सभी के लिए सुरक्षा होगी ,जहां नस्लीय दुर्व्यवहार नहीं होगा और जहां सभी को उनकी त्वचा के रंग के बराबर माना जाएगा। यह भाषण और मैक्सिको ओलंपिक की घटना दोनों एक आंदोलन का हिस्सा हैं वो अफ्रीकी-अमेरिकी लोगों की दुर्दशा को उजागर करना चाहते थे।

SHIVOM CLASSES
8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)